Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

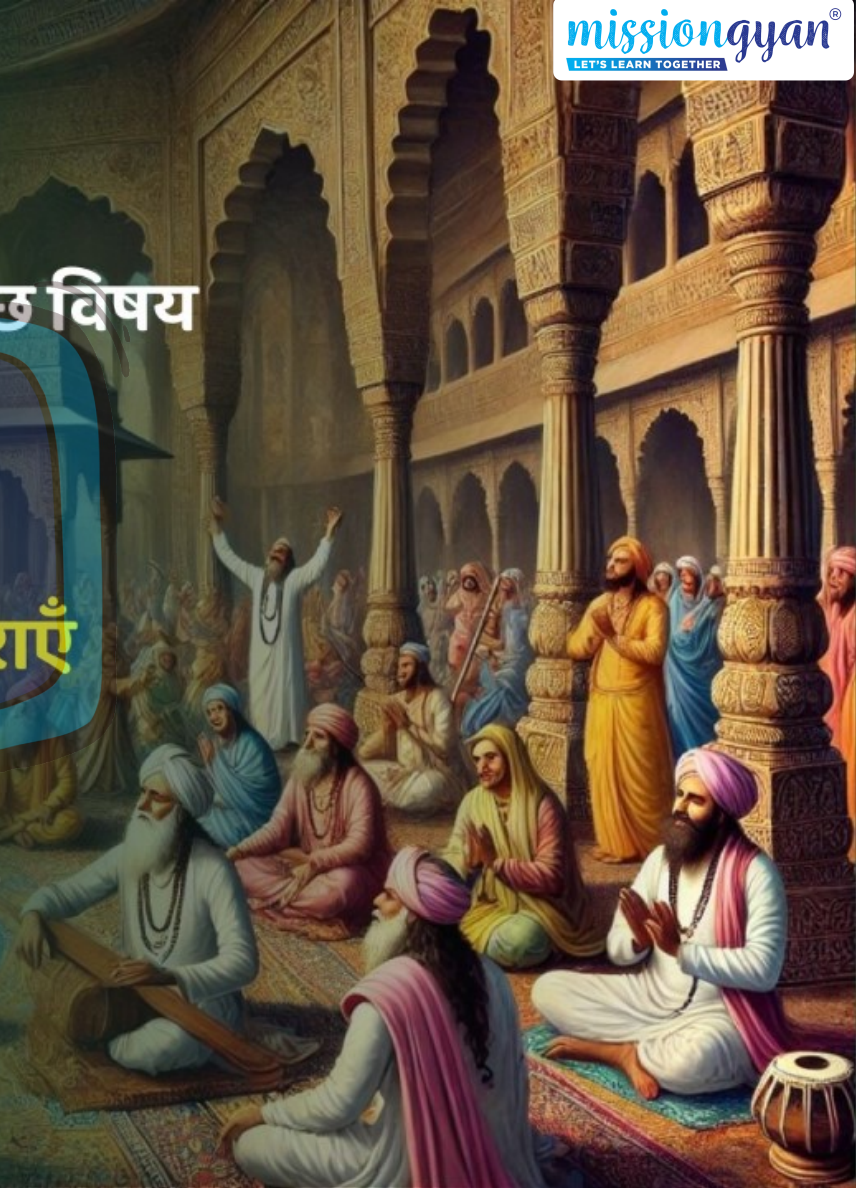
# भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 6

# भक्ति-सूफी परंपराएँ

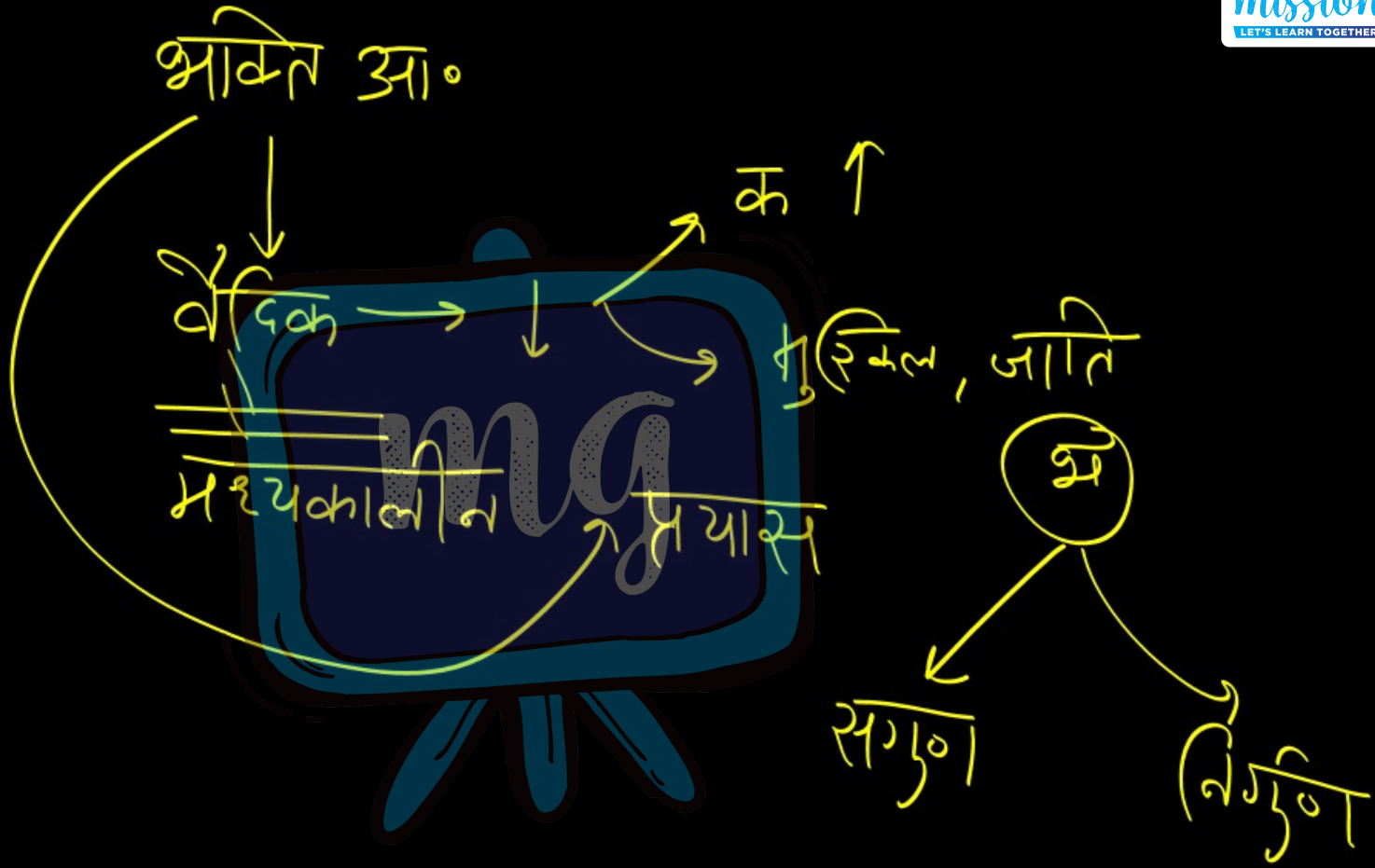
भाग - 2

प्रीतेश जोशी



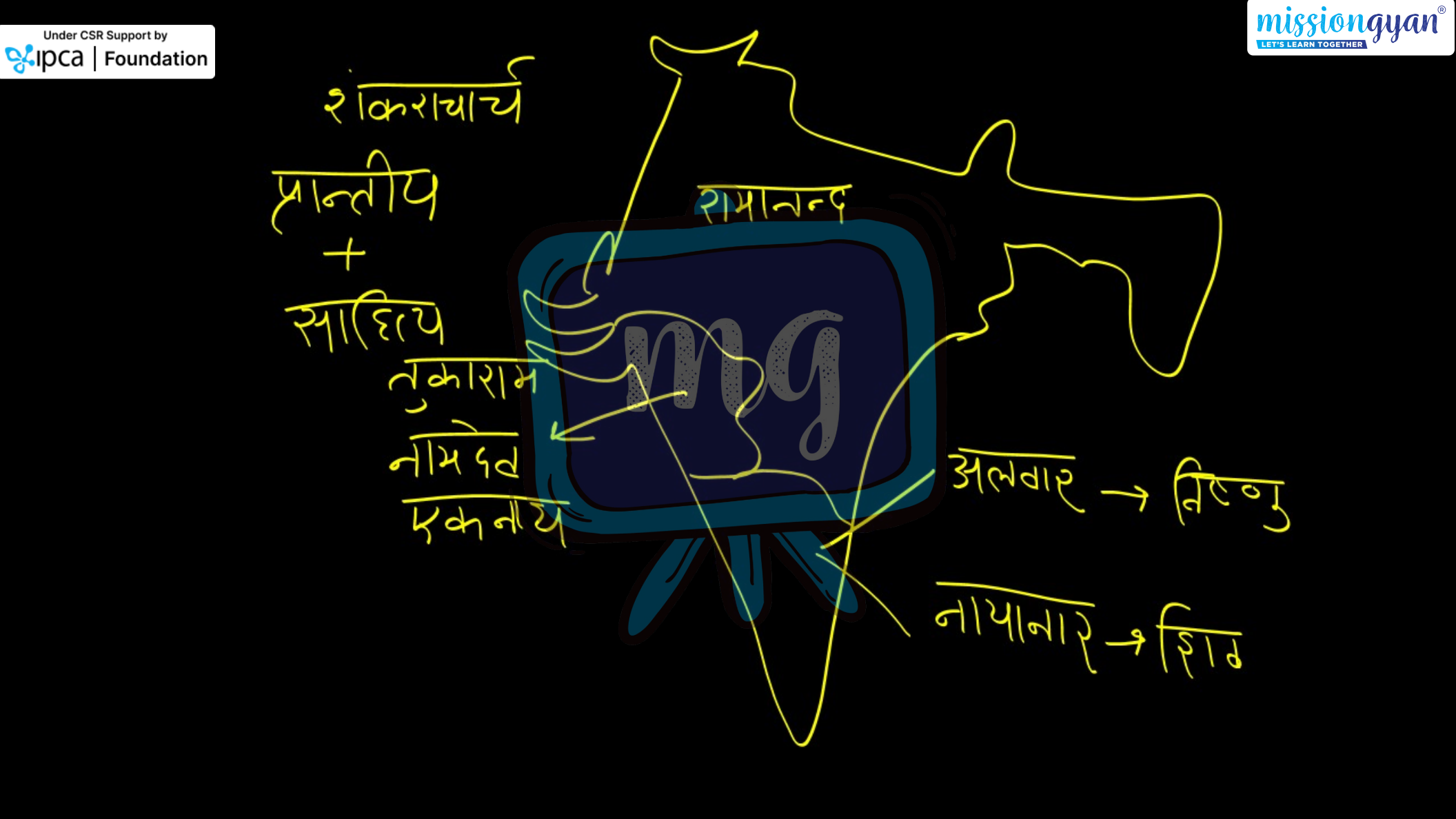
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# पूजा प्रणाली

ब्राह्मणवादी विचारधारा

अन्य सामाजिक वर्ग

## पूजा प्रणालियों का समन्वय :-

तरीका

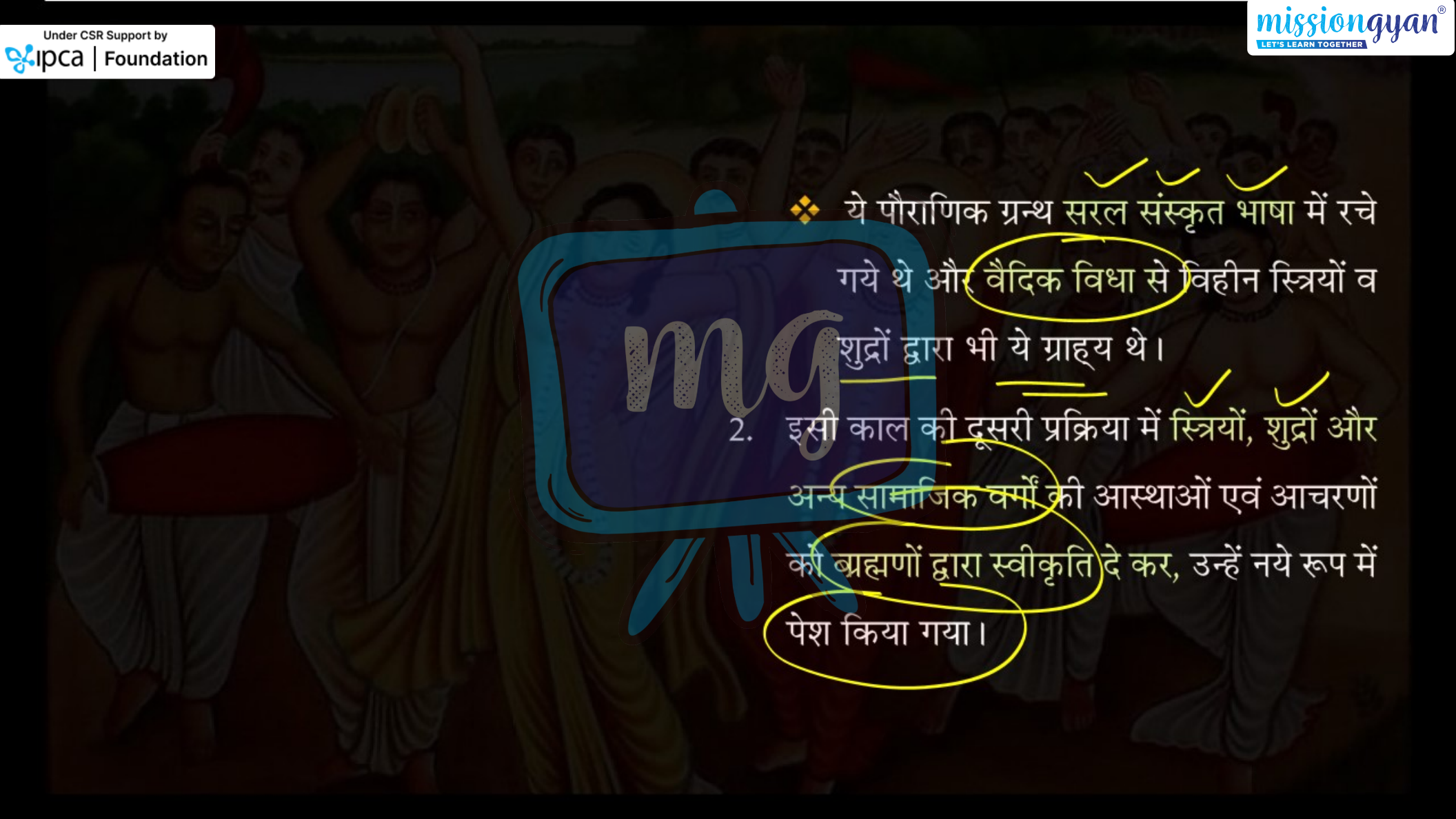
- इतिहाकारों के अनुसार पूजा प्रणाली के सम्बन्ध में दो प्रक्रियाओं का उल्लेख मिलता है।

1. पहली प्रक्रिया ब्राह्मणवादी विचारधारा के प्रसार से संबंधित थी।

- इसमें ब्राह्मणवादी विचारधारा का प्रचार-प्रसार परिश्रमपूर्वक - पौराणिक ग्रन्थों की रचनाओं का संकलन करके किया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- ये पौराणिक ग्रन्थ सरल संस्कृत भाषा में रचे गये थे और वैदिक विधा से विहीन स्त्रियों व शुद्रों द्वारा भी ये ग्राह्य थे।

2. इसी काल की दूसरी प्रक्रिया में स्त्रियों, शुद्रों और अन्य सामाजिक वर्गों की आस्थाओं एवं आचरणों को ब्रह्मणों द्वारा स्वीकृति दे कर, उन्हें नये रूप में पेश किया गया।

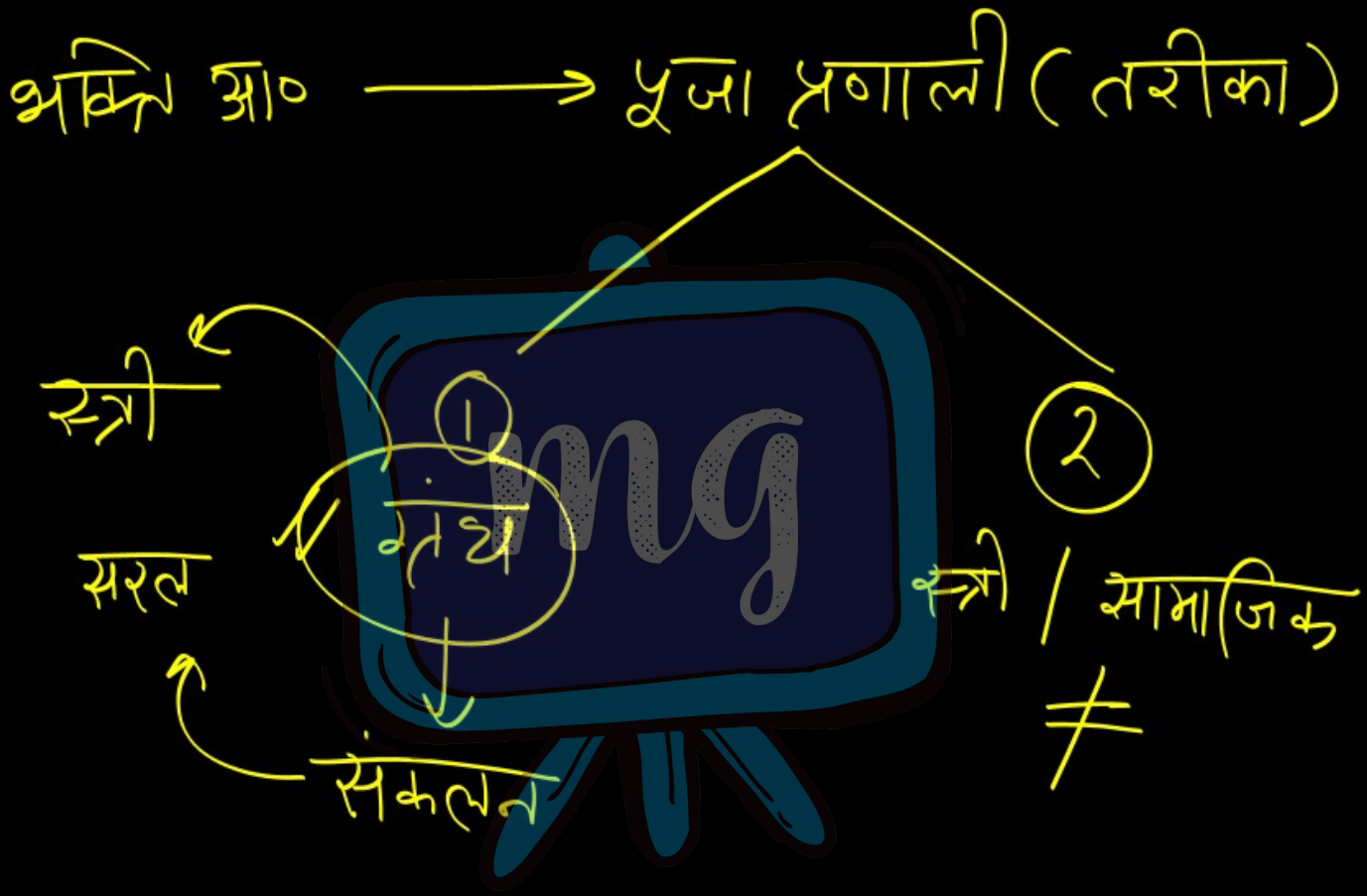
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

समाजशास्त्रियों ने सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में फैली हुई अनेक धार्मिक विचारधाराओं और पद्धतियों को 'महान' संस्कृत पौराणिक परिपाटी एवं "लघु" परम्पराओं के बीच पारस्परिक संवाद का परिणाम बताया है।

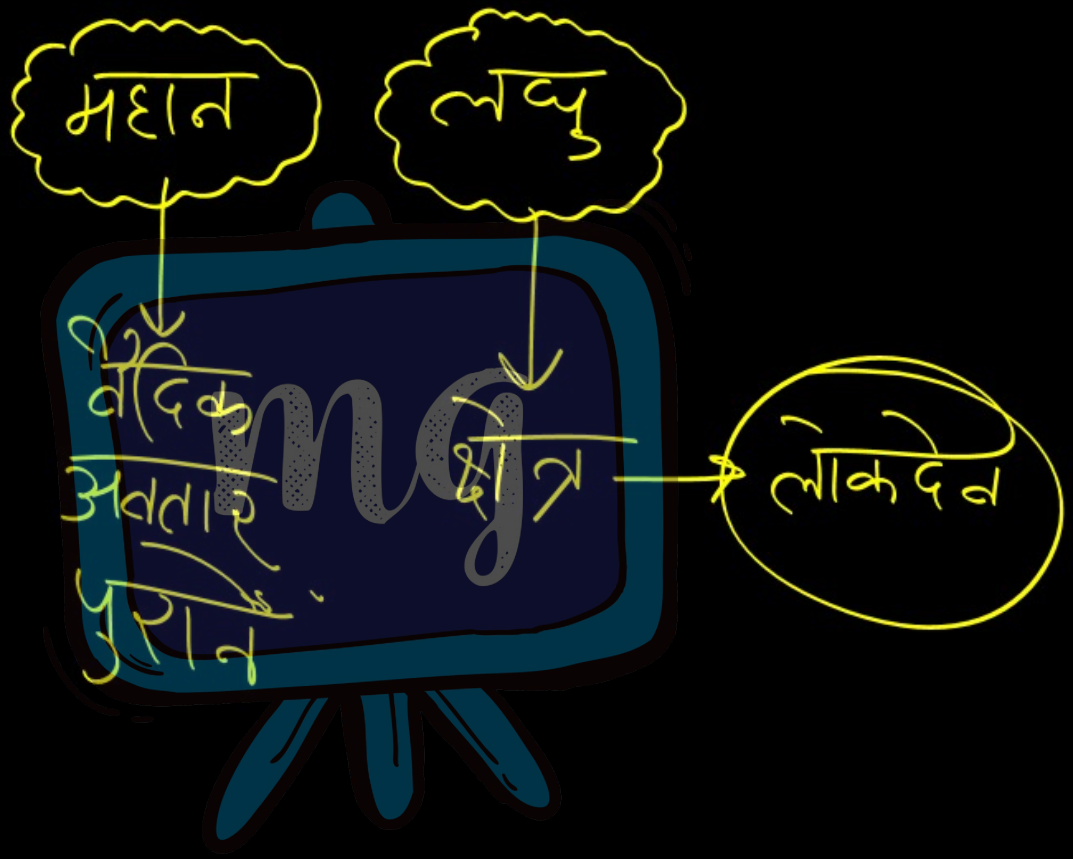
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

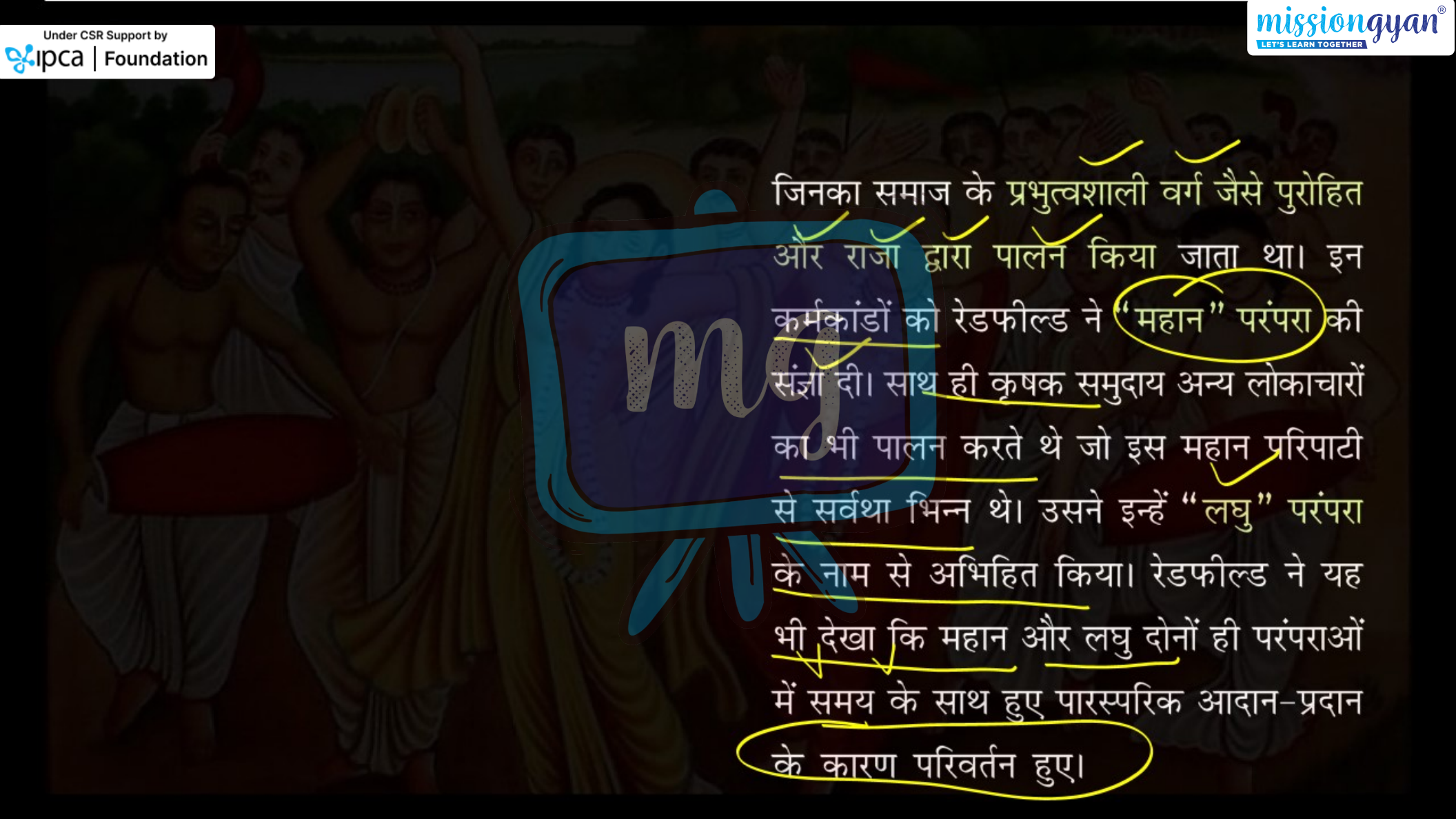
20 वी
कृषक → सामान्य

## "महान" और "लघु" परंपराएँ

"महान" और "लघु" जैसे शब्द बीसवीं शताब्दी के समाजशास्त्री राबर्ट रेडफील्ड द्वारा एक कृषक समाज के सांस्कृतिक आचरणों का वर्णन करने के लिए मुद्रित किए गए। इस समाजशास्त्री ने देखा कि किसान उन कर्मकांडों और पद्धतियों का अनुकरण करते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

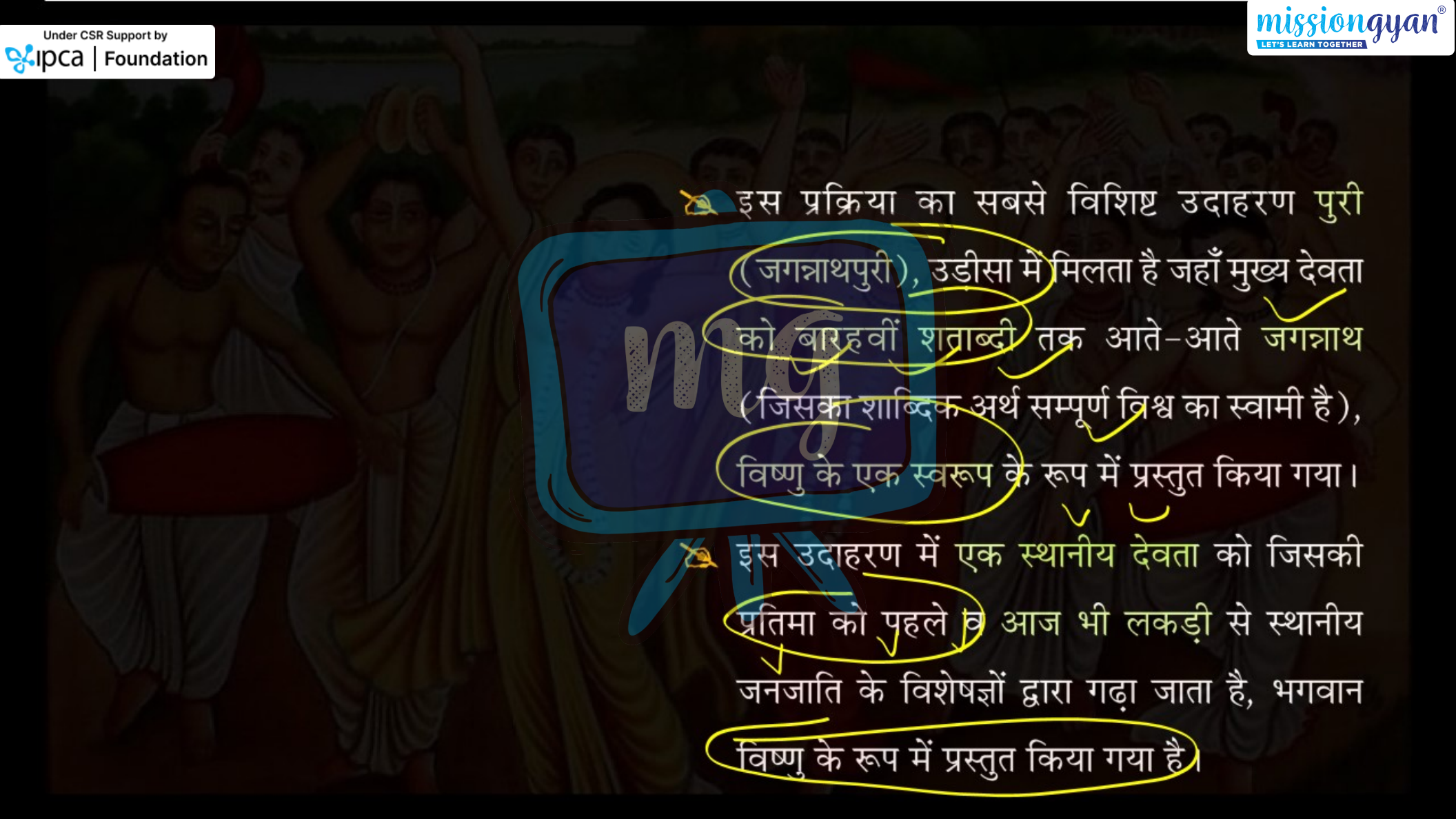
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



जिनका समाज के प्रभुत्वशाली वर्ग जैसे पुरोहित और राजा द्वारा पालन किया जाता था। इन कर्मकांडों को रेडफील्ड ने "महान" परंपरा की संज्ञा दी। साथ ही कृषक समुदाय अन्य लोकाचारों का भी पालन करते थे जो इस महान परिपाटी से सर्वथा भिन्न थे। उसने इन्हें "लघु" परंपरा के नाम से अभिहित किया। रेडफील्ड ने यह भी देखा कि महान और लघु दोनों ही परंपराओं में समय के साथ हुए पारस्परिक आदान-प्रदान के कारण परिवर्तन हुए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

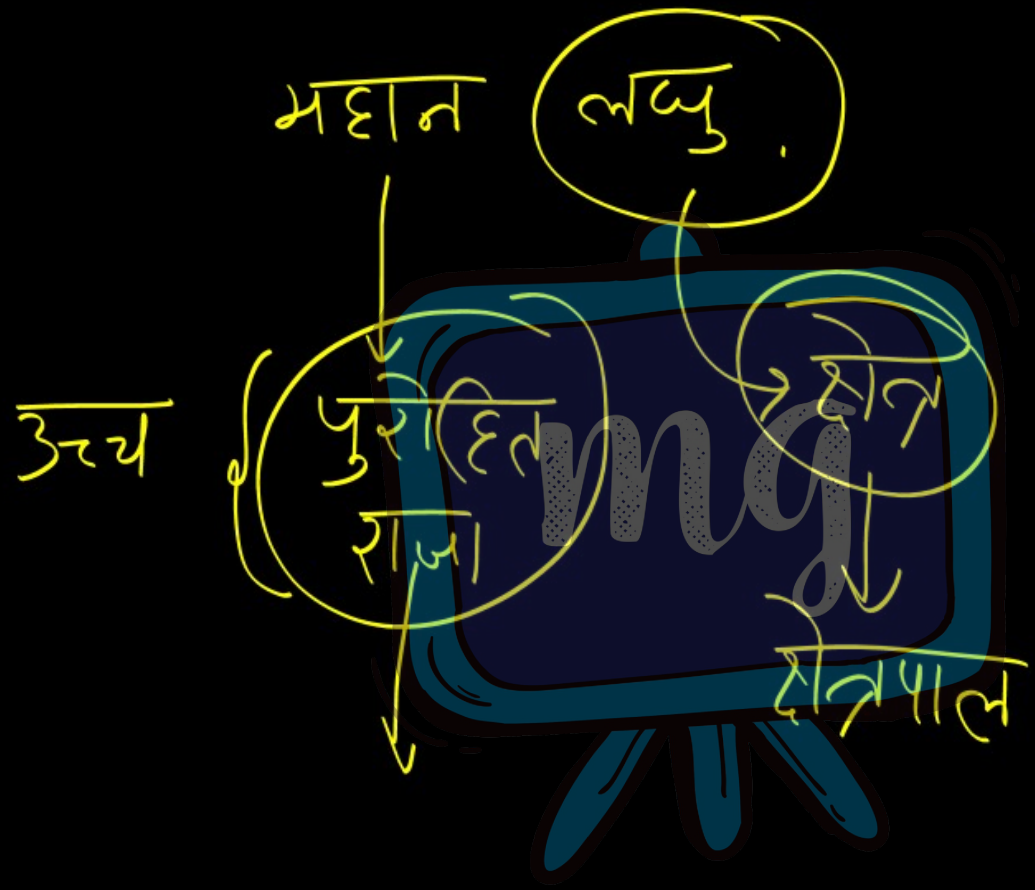
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इस प्रक्रिया का सबसे विशिष्ट उदाहरण पुरी (जगन्नाथपुरी), उडीसा में मिलता है जहाँ मुख्य देवता को बारहवीं शताब्दी तक आते-आते जगन्नाथ (जिसका शाब्दिक अर्थ सम्पूर्ण विश्व का स्वामी है), विष्णु के एक स्वरूप के रूप में प्रस्तुत किया गया।
- इस उदाहरण में एक स्थानीय देवता को जिसकी प्रतिमा को पहले व आज भी लकड़ी से स्थानीय जनजाति के विशेषज्ञों द्वारा गढ़ा जाता है, भगवान विष्णु के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

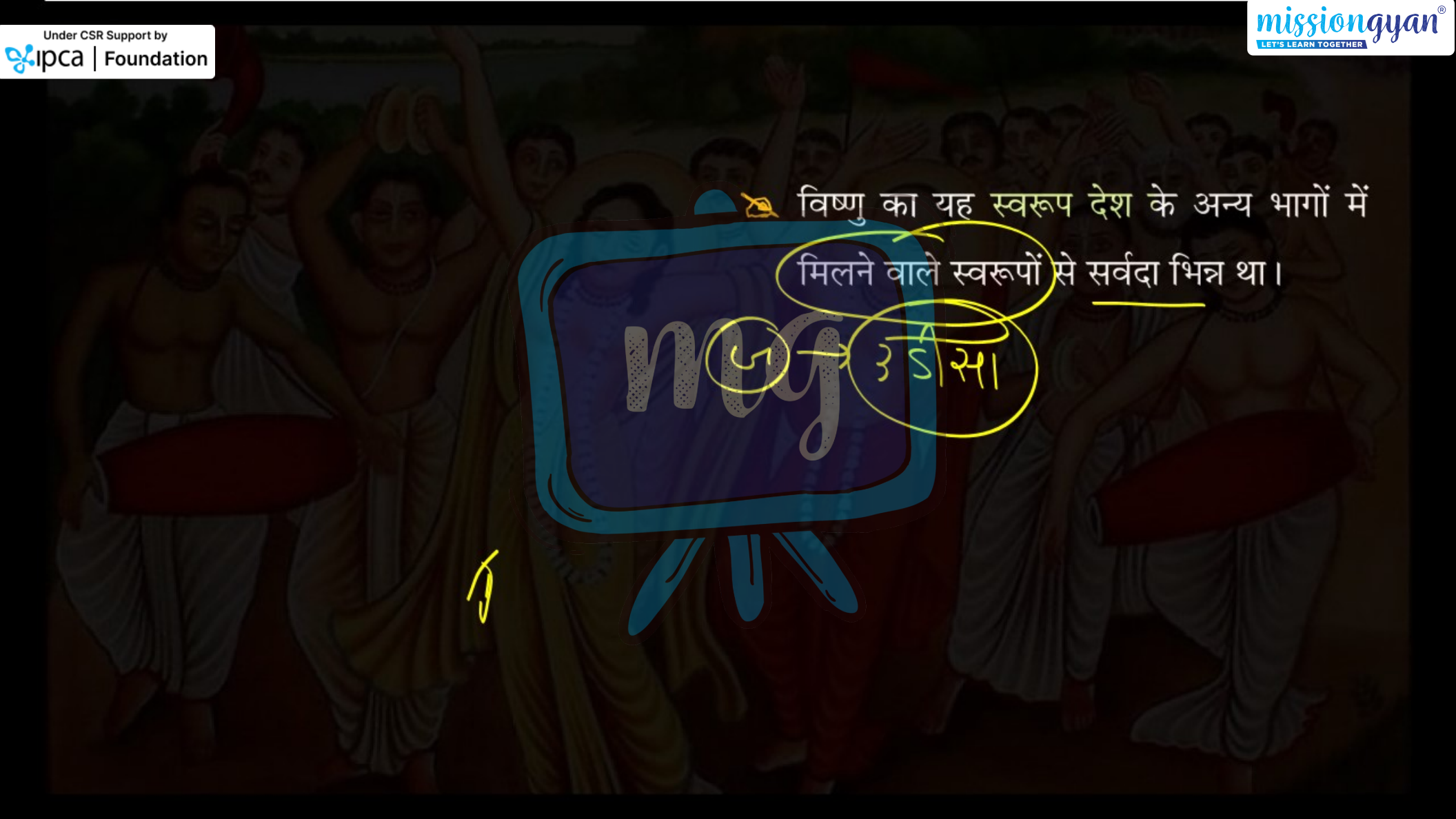
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER




20वी
रॉबर्ट रेडफील्ड
कृषक (किसान)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

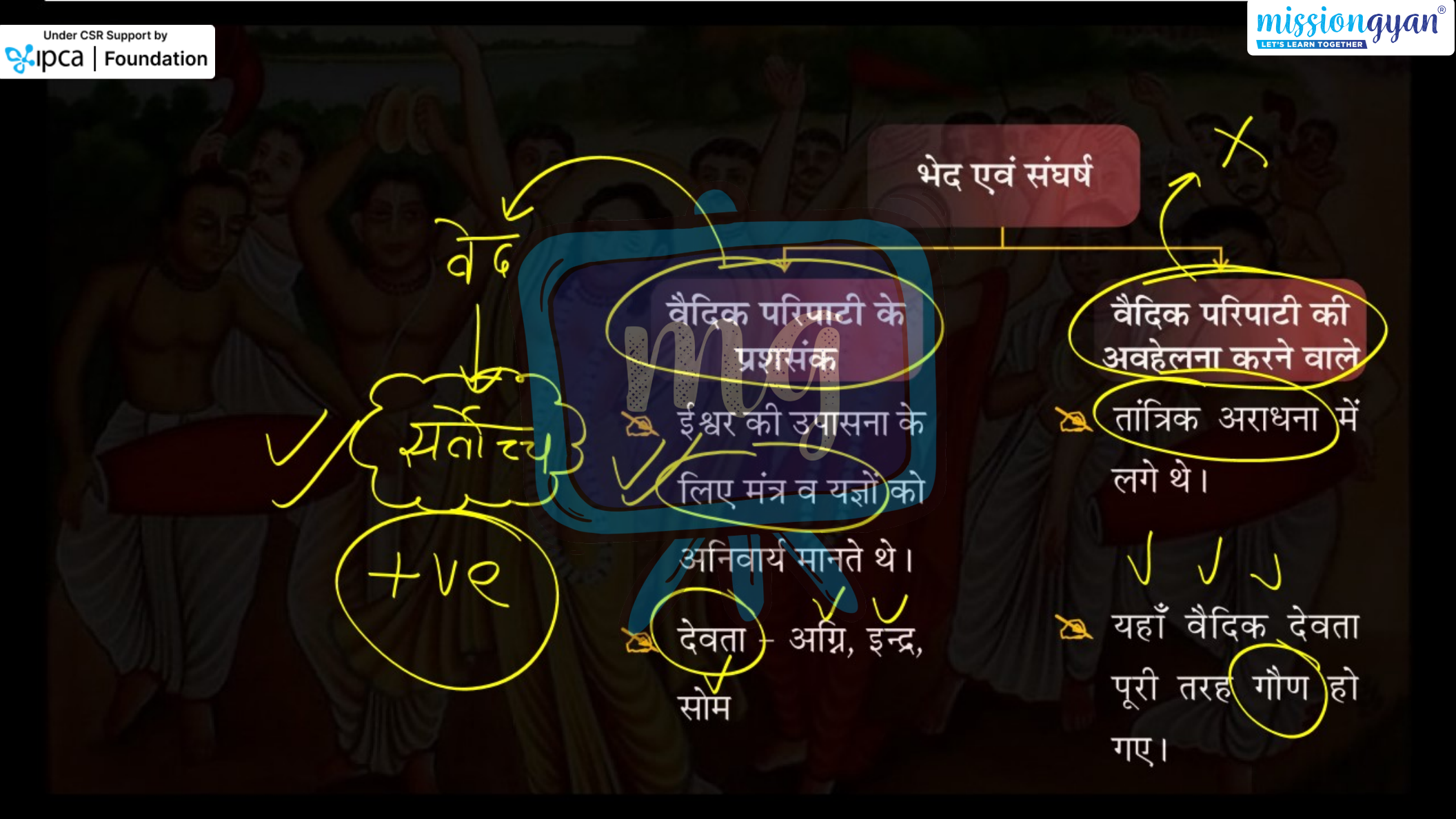
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



विष्णु का यह स्वरूप देश के अन्य भागों में मिलने वाले स्वरूपों से सर्वदा भिन्न था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



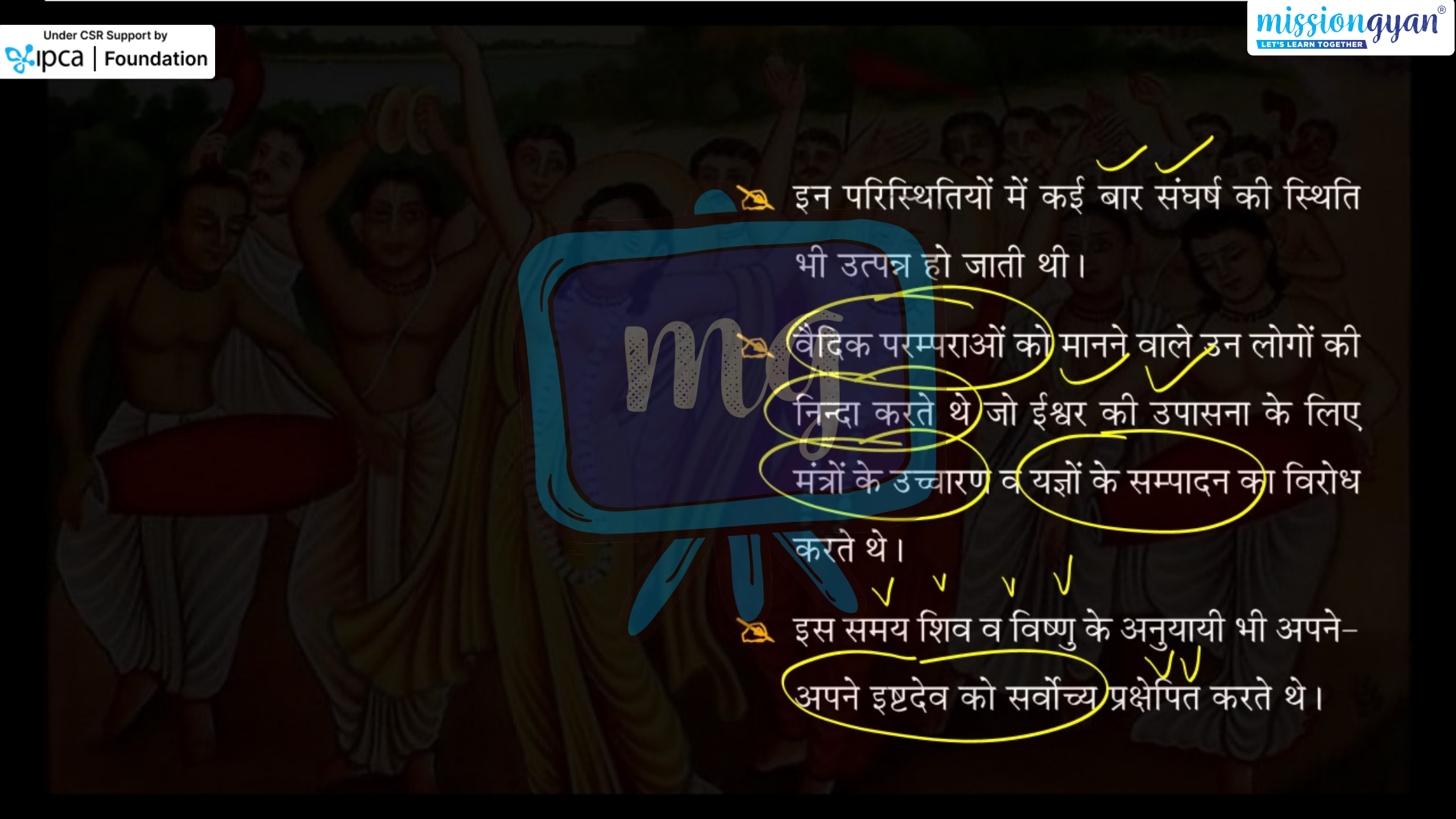
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- वैदिक व पौराणिक परम्परा के बीच तुलना करने पर यह अन्तर या विषमता और स्पष्ट रूप से सामने आती है।
- जहाँ एक ओर वैदिक देवकुल के देवता अग्नि, इन्द्र, सोम आदि गौण हो जाते हैं और साहित्य व मूर्तिकला में उनका निरूपण दिखाई नहीं देता।
- इन सभी असंगतियों के बाद भी वेदों को प्रमाणिक माना जाता रहा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इन परिस्थितियों में कई बार संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती थी।
- वैदिक परम्पराओं को मानने वाले उन लोगों की निन्दा करते थे जो ईश्वर की उपासना के लिए मंत्रों के उच्चारण व यज्ञों के सम्पादन का विरोध करते थे।
- इस समय शिव व विष्णु के अनुयायी भी अपने-अपने इष्टदेव को सर्वोच्च प्रक्षेपित करते थे।

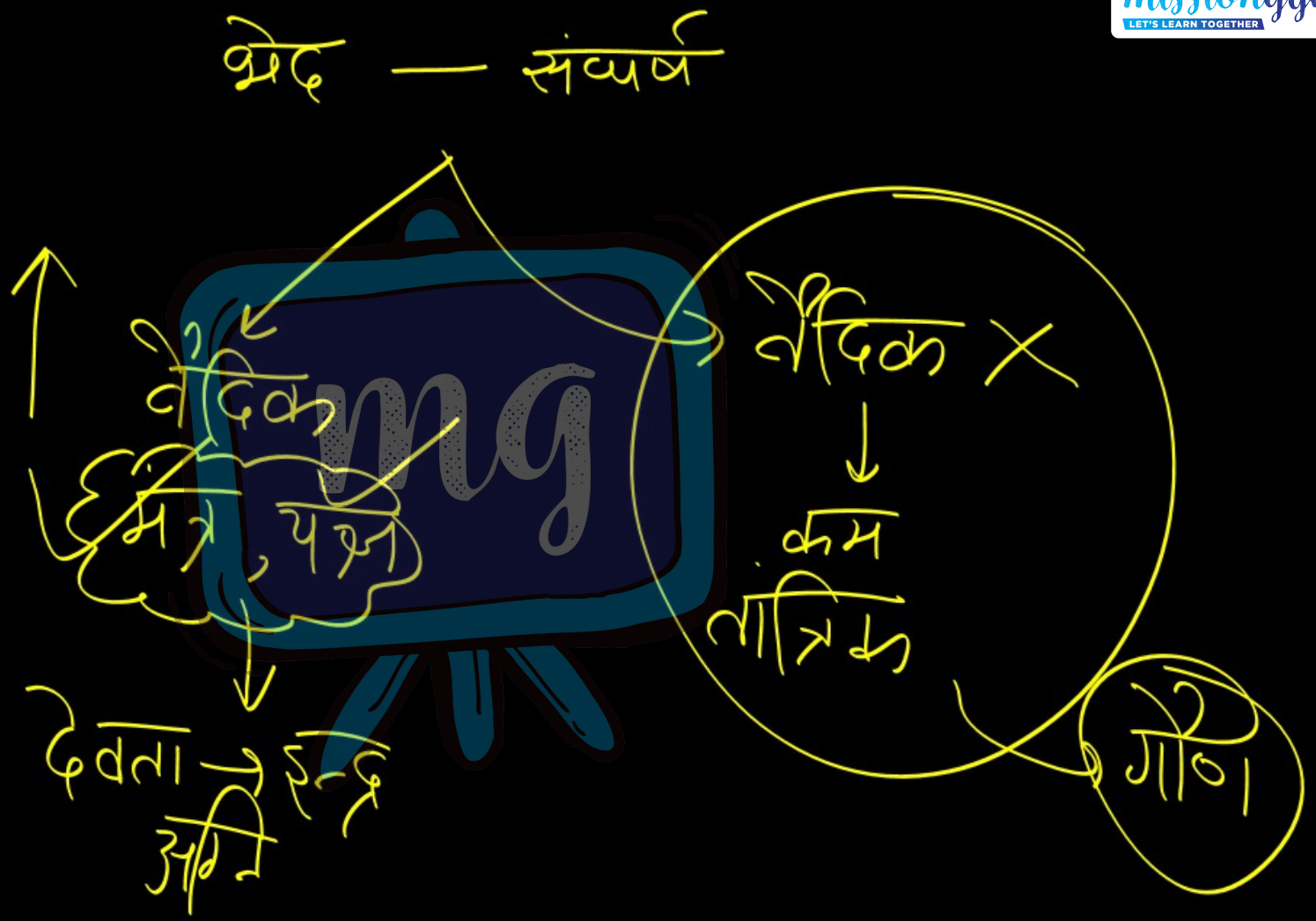
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बौध व जैन धर्म के सिद्धांतों व धर्म को मानने वाले धर्मालम्बियों के संबंध भी कभी-कभी तनावपूर्ण हो जाते थे। हालांकि स्पष्ट विरोध कम ही दिखाई देता था। भक्ति परम्परा को हमें इसी संदर्भ में देखना होगा।

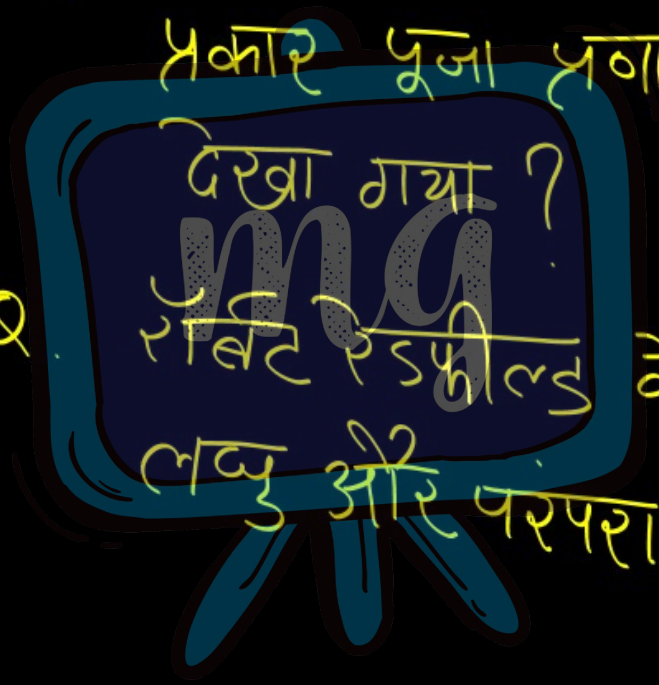
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

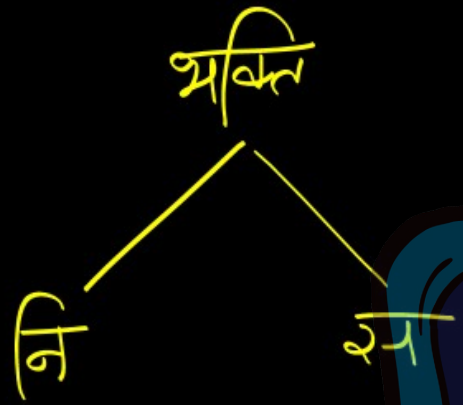


Q. मध्यकालीन भारत में किस प्रकार पूजा प्रणाली में परिवर्तन देखा गया?

Q. रॉबिट रेडफील्ड के अनुसार लघु और परपरा क्या थी?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER




## उपासना की कविताएँ :-

- भक्ति परम्परा का वर्णन करने वाले इतिहासकार इसे दो मुख्य वर्गों में बाँटते हैं -

1. सगुण (विशेषण सहित) :- सगुण भक्ति धारा में शिव, विष्णु तथा उनके अवतार व देवियों की आराधना की जाती थी, जिनकी मूर्त रूप में अवधारणा हुई।
2. निर्गुण (विशेषण विहीन) :- निर्गुण भक्ति परम्परा में अमूर्त, निराकार ईश्वर की उपासना की जाती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

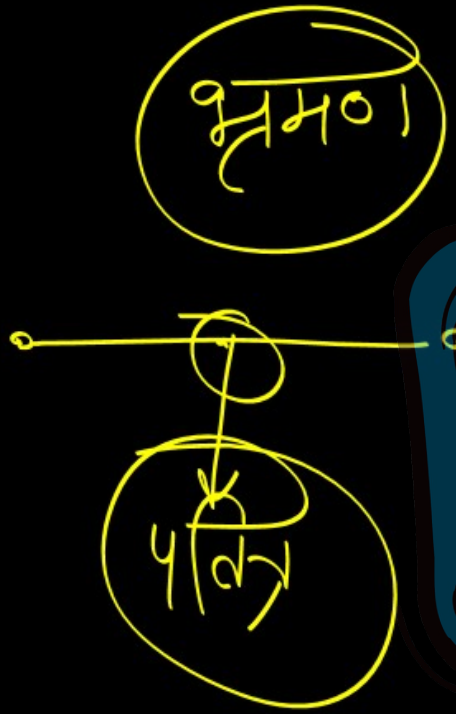


## तमिलनाडु के अलवार और नयनार संत :-

- लगभग छठी शताब्दी के प्रारंभ में भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत में अलवारों (विष्णु भक्ति में तन्मय) और नयनारों (शिव भक्त) के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ।
- अलवार व नयनार संत एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए अपने इष्ट विष्णु व शिव की स्तुति में भजन गाते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER




- उस भ्रमण व यात्राओं के दौरान अलवार व नयनार संतों ने कुछ पावन व पवित्र स्थानों को अपने इष्ट का निवास घोषित किया।
- बाद में इन्हीं स्थानों पर विशाल मन्दिरों का निर्माण किया गया व ये स्थल तीर्थ स्थल माने गये।
- यहां संत कवियों के भजनों को इन मंदिरों के अनुष्ठानों में गाया जाता था।
- इन संतों की प्रतिमाओं/मूर्तियों की भी यहां पूजा की जाती थी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

अलवार
नयानार

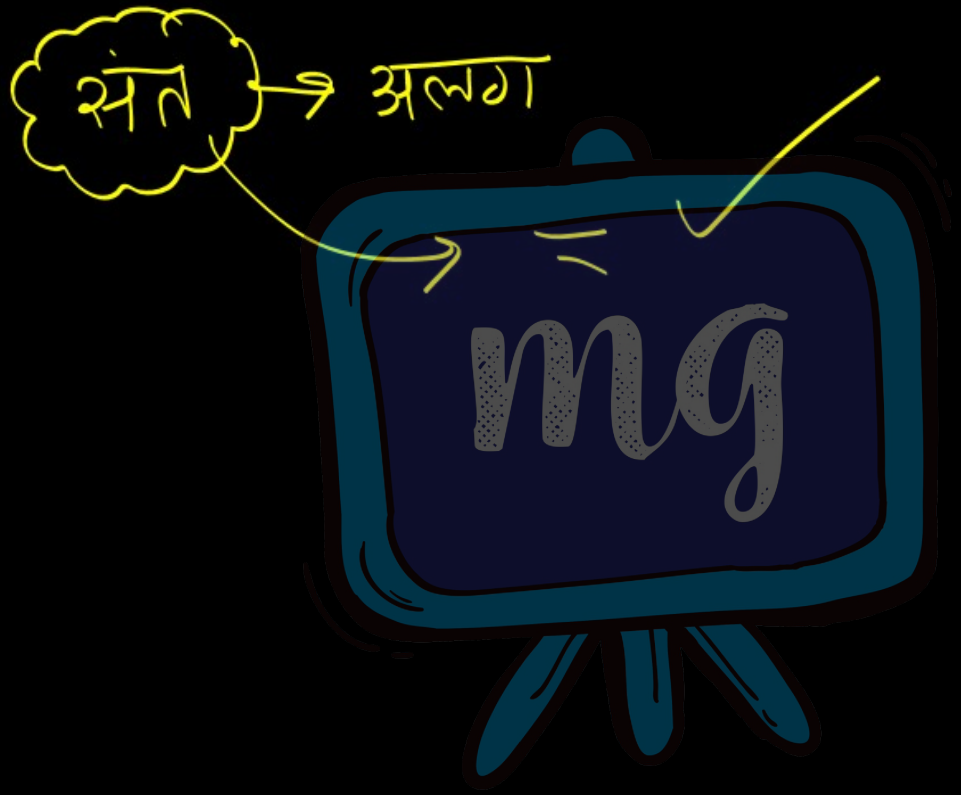
① भक्ति
② भाषा
③ ने

## जाति के प्रति दृष्टिकोण

- अलवार और नयनार संतों ने जाति प्रथा व ब्राह्मणों की प्रभुता के विरोध में आवाज़ उठाई।
- भक्ति संत विविध समुदायों से थे जैसे ब्राह्मण, शिल्पकार, किसान और कुछ तो उन जातियों से आए थे, जिन्हें "अस्पृश्य" माना जाता था।
- अलवार संतों के एक मुख्य काव्य संकलन नलयिरादिव्यप्रबंधम् का वर्णन तमिल वेद के रूप में किया जाता था। इस तरह इस ग्रंथ का महत्व संस्कृत के चारों वेदों जितना बताया गया।

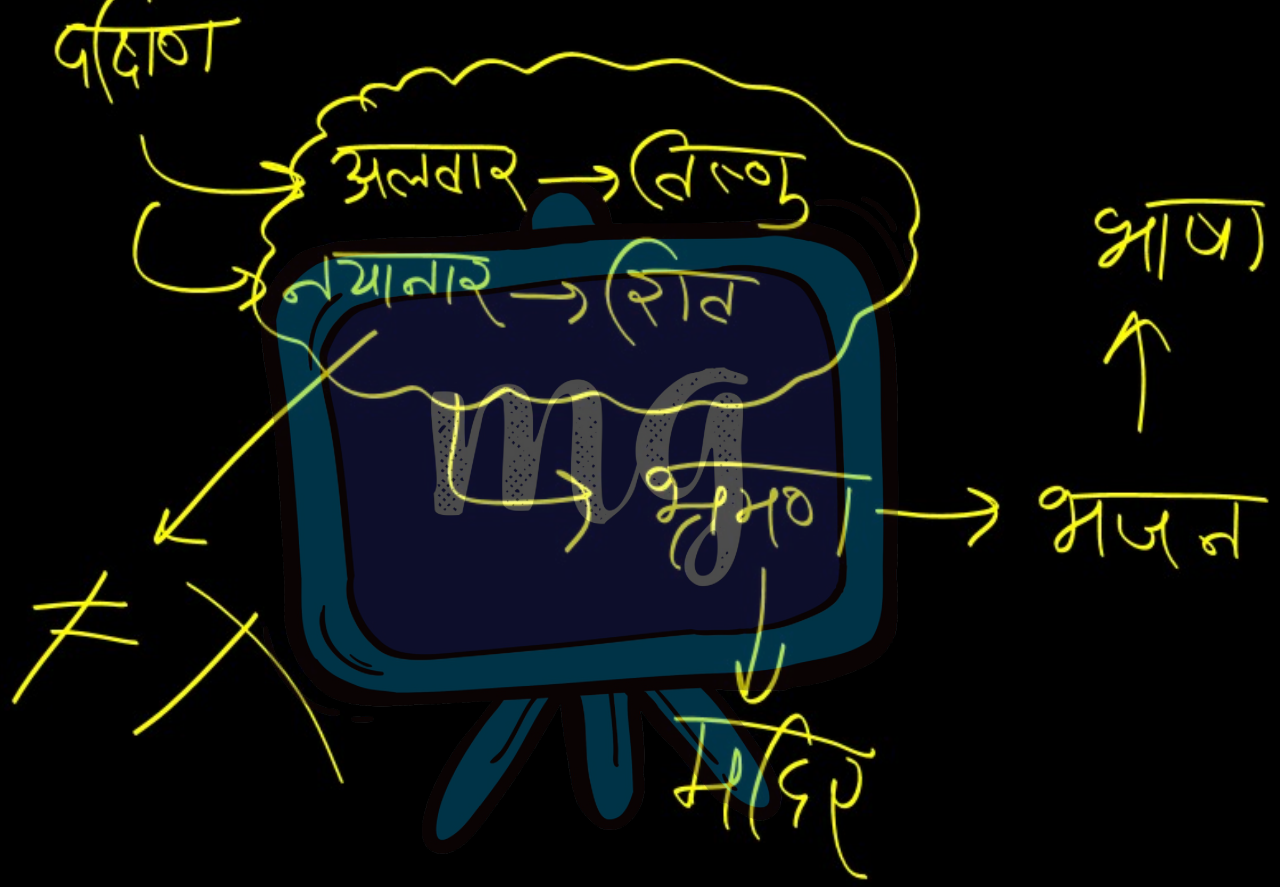
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. अलवार और नयानार संतो पर एक लेख लिखे?

